✺ 24 मई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ✺

✺ ज्ञान-

1] समझाते हैं, अगर बाप को याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। अपना ही जन्म-जन्मान्तर के लिए नुकसान करेंगे। बाप तो समझानी देते हैं, आगे के लिए सुधर जाएं।

2] अल्प को जान गये हो तो बे बादशाही जरूर मिलनी चाहिए। तो वह अवस्था जमाने में अर्थात् पतित से पावन होने में मेहनत है।

3] बाप से वर्सा लेते हो, इस दादा द्वारा। त्रिमूर्ति में है– ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं। ब्रह्मा को क्रियेटर नहीं कहेंगे। बेहद का क्रियेटर तो वह बाप ही है। प्रजापिता ब्रह्मा भी बेहद का हो गया। प्रजापिता ब्रह्मा है तो बहुत प्रजा हो जायेगी। सब कहते हैं ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर, शिवबाबा को ग्रेट-ग्रेट ग्रैन्ड फादर नहीं कहेंगे। व तो सभी आत्माओं का बाप हो गया। आत्मायें सभी भाई-भाई हैं। फिर बहन-भाई होते हैं। बेहद के सिज़रे का हेड प्रजापिता ब्रह्मा हो गया।

4] आदम और बीबी, एडम और ईव किसको कहते हैं? ब्रह्मा-सरस्वती को कहेंगे।

5] ड्रामा प्लैन अनुसार जब तक ब्राह्मण न बनें तब तकदेवता बन न सकें। जब तक पुरूषोत्तम संगमयुग पर बाप से पुरूषोत्तम बनने न आयें तो देवता बन न सकें।

6] देखो, देवताओं की आत्मायें कितनी पवित्र और चमत्कारी है, जब सोल पवित्र है तो तन भी निरोगी पवित्र मिलता है। अब यह भी सन्यास तब हो सकता है जब पहले कुछ चीज़ मिलती है।

7] यह है ईश्वरीय अतीन्द्रिय अलौकिक सुख जिसके आगे वो दुनियावी पदार्थ तुच्छ हैं, उन्हों को यह पता है कि इस मरजीवा बनने से हम जन्म-जन्मान्तर के लिये अमरपुरी की बादशाही प्राप्त कर रहे हैं, तब ही भविष्य बनाने का पुरूषार्थ कर रहे हैं। परमात्मा का बनना माना परमात्मा का हो जाना, सबकुछ उसको अर्पण कर देना फिर वो रिटर्न में अविनाशी पद दे देता है।

8] हमको कोई सन्यासियों के मुआफिक, मण्डलेश्वर के मुआफिक यहाँ महल बनाए नहीं बैठना है परन्तु ईश्वर अर्थ बीज़ बोने से वहाँ भविष्य जन्म-जन्मान्तर इनका बन जाना है। यह है गुप्त राज़। प्रभु तो दाता है एक देवे सौ पावे। परन्तु इस ज्ञान में पहले सहन करना पड़ता है जितना सहन करेंगे उतना अन्त में प्रभाव निकलेगा इसलिए अभी से लेकर पुरूषार्थ करो।

9] ब्राह्मण जीवन में सभी बच्चों का वायदा है- 'एक बाप दूसरा न कोई'। जब संसार ही बाप है, दूसरा कोई है ही नहीं तो स्वत: सहजयोगी स्थिति सदा रहेगी। अगर दूसरा कोई है तो मेहनत करनी पड़ती है।

✺ योग-

1] बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ अपने बेहद के बाप को याद करो। इसमें है मेहनत।

✺ धारणा-

1] बाप हमें हीरे जैसा देवता बना रहे हैं। यह स्मृति रहे तो कभी भी टाइम वेस्ट न करें। यह नॉलेज सोर्स ऑफ इनकम है इसलिए पढ़ाई कभी मिस न हो।

2] बाप तो समझाते रहते हैं, बच्चे अपने को सुधारने के लिए याद की यात्रा पर अटेन्शन दो। साथ-साथ चक्र को बुद्धि में रखो, दैवीगुण धारण करो। याद है मुख्य। बाकी सृष्टि चक्र की नॉलेज तो बहुत सिम्पल है। वह है सोर्स ऑफ इन्म। परन्तु उनके साथ दैवीगुण भी धारण करने हैं।

3] परमात्मा खुद आए जीते जी, देह सहित देह के सभी कर्मेन्द्रियों का मन से सन्यास कराता है अर्थात् पाँच विकरों का सम्पूर्ण सन्यास करना जरूर है।

✺ सेवा-

1] ----